

स्मृति पत्रों में बारहठ परिवार

डॉ अदिति गौड़

सहायक आचार्य, गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा(राजस्थान)

सारांश:

देश को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा में बारहठ परिवार की अग्रणी भूमिका रही है / शक्ति, भक्ति और कुर्बानी की अमरभूमि शाहपुरा के कण-कण में महान् क्रांतिकारी **केसरीसिंह बारहठ** और उनके परिवार की शौर्य गाथा गूंजती है / केसरी सिंह बारहठ का जन्म **21 नवम्बर 1872** को हुआ था, वे शाहपुरा क्षेत्र के **देवखेड़ा के जागीरदार** थे, उन्होंने युवाओं में क्रांति की अलख जगाई थी, पूरे परिवार को आजादी के आन्दोलन में झोंक दिया / केसरीसिंह बारहठ की इसी हवेली में स्वतंत्रता आन्दोलन की रणनीति तय करने के लिए गुप्त मन्त्रणा होती थी / उन्होंने महात्मा गाँधी को भी पूरा सहयोग दिया / केसरीसिंह ने राजस्थानी में **13 स्रोठे** के जरिए भी लोगों में क्रांति का बिगुल फूँका / सन् **1903** में उदयपुर

Article Publication:

Published online on: 30/12/2024

Corresponding Author:

डॉ अदिति गौड़

सहायक आचार्य, गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय,
बाँसवाड़ा(राजस्थान)

Email: aditigour9950@gmail.com

©Sadanlal Sanwaldas Khanna Mahila Mahavidyalay



Scan For Paper

रियासत के राजा फतेहसिंह ने लार्ड कर्जन द्वारा बुलाई बैठक में भाग लेने से रोकने के उद्देश्य से उन्होंने "चेतावनी रा चूंगट्या" लिखकर राजा फतेहसिंह को दिल्ली दरबार में जाने से रोका, जिससे फतेहसिंह अत्याधिक प्रभावित हुए।

पत्र-रचना - चेतावनी रा चूंगट्या

सन् 1912 में राजपूताना में ब्रिटिश सीआईडी द्वारा जिन व्यक्तियों पर निगरानी रखी जाती थी। उसमें केसरीसिंह बारहठ का नाम राष्ट्रीय सूची में सबसे ऊपर था। शाहपुरा के राजा नाहरसिंह के सहयोग से 2 मार्च 1914 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया और प्यारेलाल नामक साधू की हत्या तथा दिल्ली-लाहौर षड्यंत्र केस में



राजद्रोह का आरोप लगाया गया। केसरीसिंह को 20 वर्ष का कारावास दे दिया गया। बाद में बिहार के हजारीबाग जेल में डाल दिया। उसी दिन से अन्न जल त्याग दिया। उन्हें भय था कि अंग्रेज गुप्त बातें उगलवाने के लिए कोई चीज ना खिला दे, जिससे की उनका मस्तक विकृत हो जाए। हजारीबाग जेल से उन्हें अप्रैल 1920 में मुक्त किया गया।

जेल से छुटने के बाद आबू के जीजी को केसरीसिंह बारहठ ने एक पत्र में लिखा, उन्होंने भारत की रियासतों एवं राजस्थान के लिए उत्तरदायी सरकार की स्थापना की एक योजना प्रस्तुत की। जेल से मूक्ति के उपरांत वर्ष 1920-21 में सेठ जमनालाल बजाज के बुलावे पर केसरीसिंह वर्धा गये। वहां विजयसिंह पथिक के साथ मिलकर "राजस्थान केसरी" नामक साप्ताहिक पत्रिका निकालना प्रारम्भ किया।

वर्धा में केसरीसिंह बारहठ महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आए और डॉक्टर भगवानदास पुरुषोत्तमटंडन, गणेश शंकर विद्यार्थी, राव गोपालसिंह खरवा, माखनलाल चतुर्वेदी, अर्जुनलाल सेठी आदि वर्धा में उनके साथीगण रहे।

केसरीसिंह योगी पुरुष के रूप में जाने जाते थे। उनके प्रमुख ग्रन्थ **प्रतापसिंह चरित्र**, **रूठी रानी**, **कुसुमांजलि**, **दुर्गादास चरित्र** इत्यादि रहे हैं। यह डिंगल भाषा के कवि थे। 7 अगस्त 1941 को कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का देहांत हो गया। यह खबर जब केसरीसिंह बारहठ को उनके डॉक्टर द्वारा सुनाई गई तो उन्होंने कहा- अब तो कवियों का दरबार ऊपर ही लगेगा। महान् कवि हो गया वह टैगोर की मृत्यु के 7 दिन पश्चात् ठाकुर केसरी सिंह का देहांत क्रांतिकारी कवि थे जिन्होंने राष्ट्र की आजादी के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

❖ केसरी सिंह बारहठ पत्रों का संकलन-

1. अर्जुनलाल सेठी का पत्र ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के नाम:-

वन्दे मातरम् !

अल्ला हो अकबर राजस्थान, मध्यभारत तथा अजमेर (मारवाडा)

प्रांतीय कांग्रेस कार्यालय, अजमेर ता. 28-5-1924

सेवा में,

श्रीयुत् ठाकुर केसरीसिंह जी साहब ,

कोटा

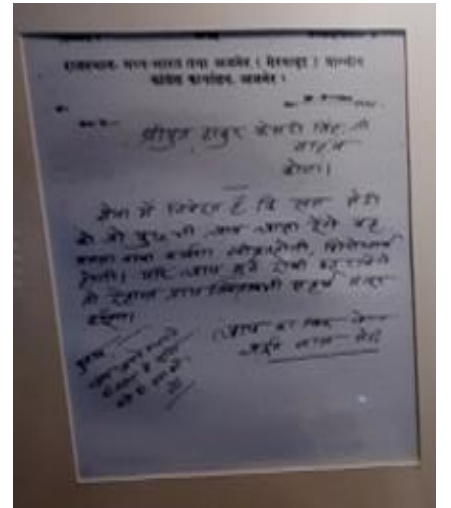
सेवा में निवेदन है कि दास सेठी को जो कुछ भी आप आज्ञा देंगे वह

मनसा वाचा कर्मणा स्वीकृत होगी, शिरोधार्य होगी। यदि आप मुझे दोषी ठहावेंगे तप देहांत प्रायश्चित तक भी सहर्ष मंजूर करूंगा।

आपका चिर सेवक

अर्जुनलाल सेठी

2. डिप्टी कमिश्नर हजारीबाग से केसरीसिंह बारहठ के नाम पत्र :-



TO,

THANKUR KESARI SINGH BARHUT

C/O PANDIT PURUEHO TAM DAS

TANDAN, B A. L.L.B VAKIL

HIGH COURT ALLAHABAD

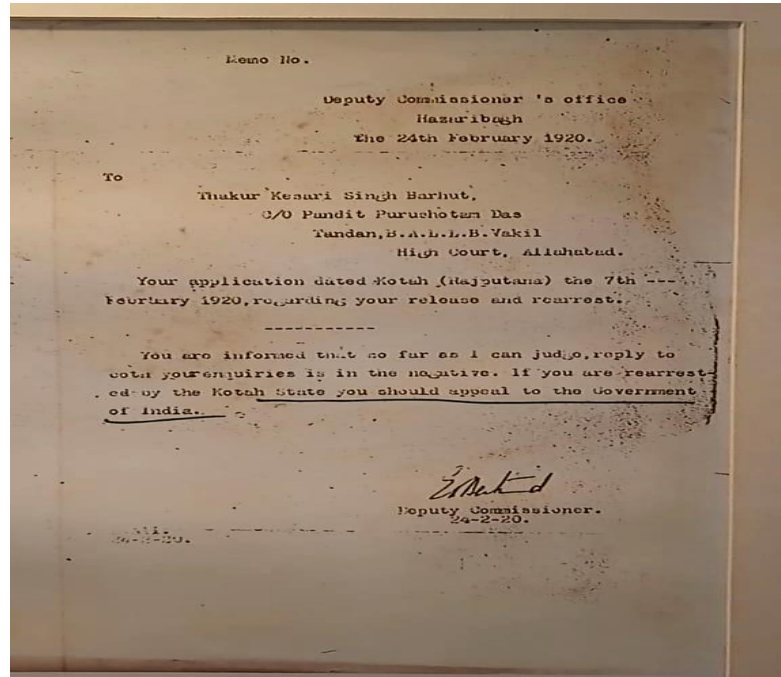
YOU ARE INFORMED THAT TO FOR..... I AM JUDGE REPLY TO.....

YOUR ENQUIRIES IS IN THE NEGATIVE. IF YOU REARRESTED BY THE

KOTAH STATE YOU SHOULD APPEAL TO THE GOVERNMENT OF

INDIA.

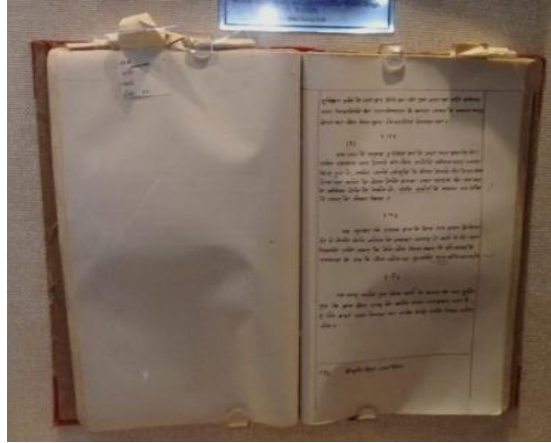
24-2-20



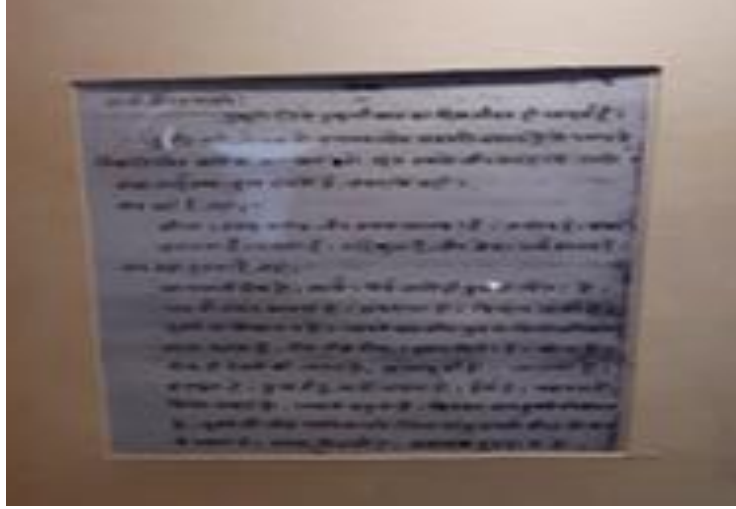
3. केसरीसिंह बारहठ द्वारा अपनी पुत्री चन्द्रमणि के नाम पत्र:-

प्यारी सौभाग्यमणि,

तुम्हारे लिए तुम्हारी माता का दिव्यजीवन ही आदर्श है पुत्री! यदि जीवन को सुखमय और यशस्वी बनाना है तो ध्यान दे निम्नलिखित बातों को बा- बार पढ़ो... और व्यवहार में लाओ

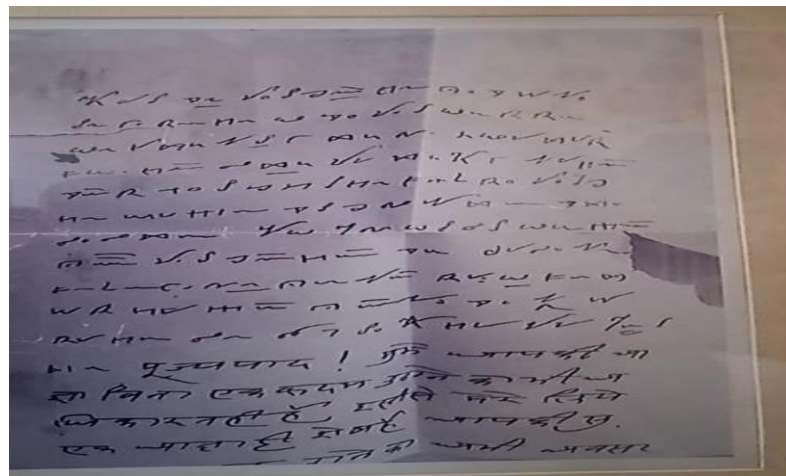


केसरीसिंह बारहठ द्वारा लिखे पत्रों में कूट लिपि का प्रयोग :-



4. अश्वघोष द्वारा रचित बुद्ध चरितं का केसरीसिंह बारहठ द्वारा हिंदी अनुवाद :-

उस नगर में मनुष्य दुःखित मन ईधर-उधर घूम रहे थे | उनकी प्रसन्नता नष्ट हो गयी थी और उन्होंने मलिन वस्त्र धारण हिये हुए थे, उनकी आँखें आँसुओं में क्षीण हो गयी थी ऐसा..... होता था मानो ये लोग दोनों..... में प्रविष्ट होने से रोकने थे , भीगे सफरन के समान उन दोनों ने नगर में प्रवेश किया |



प्रतापसिंह बारहठ- ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के पुत्र "प्रतापसिंह बारहठ" भारतीय इतिहास के गगन पटल पर चमकने वाला एक ऐसा ध्रुव तारा है, जिसने ना केवल राजस्थान के बल्कि पूरे भारतवर्ष को गौरवान्वित किया था। उनका जन्म महान् राष्ट्र भक्त बारहठ के पुत्र के रूप में माता मणिककंवर की कोख से **24 मई 1893** के दिन **उदयपुर** में हुआ था। 15वर्ष की आयु में उन्हें स्वतंत्र शिक्षण के लिए देशभक्त मास्टर अमीचंद जी के यहाँ क्रांतिकारियों की शिक्षा-दीक्षा के लिए दिल्ली भेजा गया।

अमीचंद जी के पकड़े जाने के बाद सेठी जी इन दोनों को वापस अज्ञातवासी हो गए। पिता पर मुकदमा चला, झूठ और छल-कपट से चलाये मुकदमे में पिता के धैर्य और साहस को देखकर प्रताप गौरव से भर गये थे। इधर-उधर भ्रमण करते हुए सिंध से हैदराबाद चले गये। वहाँ से पुनः आने का निर्देश मिला परन्तु आसानाड़ा (जोधपुर) में पकड़े गये प्रतापसिंह को 5 वर्ष की कठोर सजा दी गई और बरेली जेल में अमानवीय यातना का दौर शुरू हो गया। उन दिनों जेल की बर्बरता क्रांतिकारियों को दी जाने वाली यातनाओं को सुनकर हृदय सिहर उठता है।

दंड और यातना को सहते-सहते प्राणों के दीपक बुझने लगे सरकार नहीं चाहती थी कि क्रांति की सूक्ष्म चिंगारी बाहर निकले विदेशी सरकार के क्रूर अधिकारियों की यातनाओं को सहते हुए **24 मई 1918** को उनका देहांत हो गया। अपने खानदान को राष्ट्रहित पर बलिदान करने वालों में सिख धर्म के दसवें गुरु **गोविन्द सिंहजी** के परिवार और राजस्थान के **बारहठ परिवार** को सदा याद किया जाता रहेगा।

❖ प्रतापसिंह बारहठ बारहठ पत्रों का संकलन-

1. केन्द्रीय बरेली जेल में प्रतापसिंह के हस्ताक्षर



प्रतापसिंह बारहठ का एक मात्र पत्र-ममेरे भाई दुर्गादान को लिखा गया



सन्दर्भ ग्रन्थ :-

- सामुख्यअध्ययन, शाहपुरा संग्रहालय
- पालीवाल, देवीलाल एवं जावलिया, ब्रज मोहन, क्रान्तिकारी बारहठ केसरीसिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- लखावत, ओंकार सिंह, स्वातंत्र्य राजसूय यज्ञ में बारहठ परिवार की महान् आहुति
- गुप्ता, मोहन लाल, क्रान्तिकारी केसरी सिंह